Topic 82

# अव्यय प्रकरण 2

क्त्वा - तोसुन - कसुनः ।

एतदन्तमव्ययम् । कृत्वा । उदेतोः । विसृपः

क्त्वाप्रत्ययान्त, तोसुन - प्रत्ययान्त और कसुन् - प्रत्ययान्त अव्यय संज्ञक होते हैं।

अव्ययीभावश्च ।

अधिहरि ।

अव्ययीभाव समास अव्यय - संज्ञक होता है।

अव्ययादाप्सुपः ।

अव्ययाद् विहितस्यापः सुपश्च लुक् ।
तत्र शालायाम् ।

(अव्ययलक्षणम् )

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु ।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम् ।

(भागुरिमतम् )

वष्टि भागुरिरल्लोपमवाप्योरुपसर्गयोः ।
आपं चैव हलन्तानां यथा वाचा निशा दिशा ।
वगाहः । अवगाहः । पिधानम् । अपिधानम् ।

वृत्तिकार ने इस प्रकरण के अन्त में दो आचार्यों के मत को उद्धृत किया है।

सदृशमिति — यह अव्यय की परिभाषा है।

भावार्थ है - जो तीनों लिङ्गों, सब विभक्तियों और सब वचनों में विकार को नहीं प्राप्त होता अव्यय कहते हैं।

आचार्य

वष्टि इति - श्री भागुरि आचार्य 'अव' और 'अपि' उपसर्गों के ~~आकार पर लोप~~ अकार का लोप चाहते हैं तथा हलन्त शब्दों से स्त्री-बोधक 'आप्' प्रत्यय विधान करना चाहते हैं। पाणिनि का मत न होने के कारण ये आदेश विकल्प से होंगे। 'अव' और 'अपि' के अकार लोप के उदाहरण 'वगाहः' और 'पिधानम्' शब्दों में मिलते हैं। लोपाभावपक्ष में 'अवगाहः' और 'अपिधानम्' रूप बनेंगे। इसी प्रकार हलन्त शब्दों से 'आप्' प्रत्यय के उदाहरण 'निशा', 'वाचा', 'दिशा' आदि में मिलते हैं। अभावपक्ष में 'निश्', 'वाच्', 'दिश्' आदि रूप रहेंगे।